

Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the 'Committee on Publication Ethics'

Online ISSN:2584-184X



Research Article

भारतीय विदेश नीति में निरंतरता और परिवर्तन : राष्ट्रीय हितों के संरक्षण हेतु कूटनीतिक प्रयासों का ऐतिहासिक सर्वेक्षण (1947-2026)

^{ID} Dr. Madhulika kumari

Assistant Professor, Shri Davara University, Raipur, Chhattisgarh, India

Corresponding Author: *Dr. Madhulika Kumari^{ID}

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.19453724>

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र स्वतंत्रता के पश्चात से वर्तमान समय तक भारतीय विदेश नीति के क्रमिक विकास का एक गहन ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इस अध्ययन का मुख्य केंद्र बिंदु यह समझना है कि कैसे भारत ने अपने राष्ट्रीय हितों के संरक्षण के लिए विभिन्न कालखंडों में 'निरंतरता' और 'परिवर्तन' के बीच एक कूटनीतिक संतुलन बनाए रखा है। शोध पत्र के प्रथम चरण में नेहरूवादी युग के आदर्शवाद, गुटनिरपेक्षता और पंचशील के सिद्धांतों की विवेचना की गई है, जो दशकों तक भारतीय विदेश नीति का आधार रहे। द्वितीय चरण में शीतयुद्ध के समीकरणों, क्षेत्रीय युद्धों और 1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद आए यथार्थवादी बदलावों का अध्ययन किया गया है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, यह शोध पत्र भारत की 'रणनीतिक स्वायत्तता', 'एक्ट ईस्ट' नीति, और 'ग्लोबल साउथ' के नेतृत्वकर्ता के रूप में उभरती भूमिका पर प्रकाश डालता है। विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि जहाँ भारत ने अपने मूल शांतिवादी सिद्धांतों को निरंतर रखा है, वहीं बदलती वैश्विक भू-राजनीति के उत्तर में अपनी कूटनीति को अधिक मुखर और सक्रिय बनाया है। अंततः, यह शोध पत्र यह निष्कर्ष निकालता है कि भारतीय विदेश नीति का समकालीन स्वरूप 'राष्ट्रीय हित सर्वोपरि' के सिद्धांत पर आधारित है, जो इसे एक उत्तरदायी और सशक्त वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करता है।

Manuscript Information

- ISSN No: 2584-184X
- Received: 02-02-2026
- Accepted: 26-03-2026
- Published: 07-04-2026
- MRR:4(4); 2026: 78-88
- ©2026, All Rights Reserved
- Plagiarism Checked: Yes
- Peer Review Process: Yes

How to Cite this Article

Kumari M. भारतीय विदेश नीति में निरंतरता और परिवर्तन: राष्ट्रीय हितों के संरक्षण हेतु कूटनीतिक प्रयासों का ऐतिहासिक सर्वेक्षण (1947-2026). इंडियन जर्नल ऑफ मॉडर्न रिसर्च रिव्यू, 2026;4(4):78-88.

Access this Article Online



www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द: भारतीय विदेश नीति, राष्ट्रीय हित, कूटनीति, गुटनिरपेक्ष आंदोलन, सामरिक स्वायत्तता, वैश्विक दक्षिण, भू-राजनीति।

प्रस्तावना

किसी भी संप्रभु राष्ट्र की विदेश नीति उसके राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने और वैश्विक मंच पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराने का सबसे सशक्त माध्यम होती है। भारतीय विदेश नीति का विकास केवल कूटनीतिक निर्णयों का समूह नहीं है, बल्कि यह भारत के हजारों वर्षों के सांस्कृतिक दर्शन, औपनिवेशिक संघर्ष की स्मृतियों और आधुनिक राष्ट्र निर्माण की आकांक्षाओं का एक जटिल मिश्रण है। प्रसिद्ध कूटनीतिज्ञ

जे.एन. दीक्षित के अनुसार, 'किसी राष्ट्र की विदेश नीति उसके आंतरिक हितों का ही बाहरी विस्तार होती है।' "भारत के संदर्भ में यह कथन विशेष रूप से सत्य प्रतीत होता है, जहाँ घरेलू विकास की आवश्यकता ने सदैव विदेश नीति के दिशा-निर्देशों को निर्धारित किया है। भारतीय विदेश नीति के अध्ययन में 'निरंतरता' और 'परिवर्तन' दो ऐसे ध्रुव हैं, जिनके इर्द-गिर्द पूरी कूटनीति घूमती है। स्वतंत्रता के समय,

जब विश्व 'शीतयुद्ध' की विभीषिका और दो ध्रुवीय गुटों (अमेरिका और सोवियत संघ) में विभाजित था, तब भारत ने 'गुटनिरपेक्षता' का मार्ग चुना। यह केवल एक तटस्थता की नीति नहीं थी, बल्कि जैसा कि **जवाहरलाल नेहरू** ने संविधान सभा में कहा था:

"विदेश नीति का अर्थ केवल यह नहीं है कि हम दूसरों के साथ कैसे संबंध रखते हैं, बल्कि इसका अर्थ यह है कि हम अपनी स्वतंत्रता और संप्रभुता को वैश्विक दबावों के बीच कैसे सुरक्षित रखते हैं।"

ऐतिहासिक सर्वेक्षण करने पर स्पष्ट होता है कि भारत की विदेश नीति में 'आदर्शवाद' और 'यथार्थवाद' का एक अनूठा द्वंद्व रहा है। यदि नेहरू युग में 'पंचशील' के सिद्धांतों के माध्यम से वैश्विक शांति और एशियाई एकता पर बल दिया गया, तो 1971 के बांग्लादेश संकट और 1974 के 'पोखरण-I' परमाणु परीक्षण ने भारत के यथार्थवादी और सुरक्षा-केंद्रित दृष्टिकोण को उजागर किया। कूटनीतिक विद्वान **सी. राजामोहन** का तर्क है कि भारत की विदेश नीति अब अपनी पारंपरिक हिचकिचाहट को त्यागकर एक 'रणनीतिक स्वायत्तता' की ओर बढ़ चुकी है।

1991 का वर्ष भारतीय विदेश नीति के लिए एक जलविभाजक सिद्ध हुआ। सोवियत संघ के पतन और भारत के आर्थिक संकट ने नई दिल्ली को अपनी नीतियों पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर किया। यहीं से 'लुक ईस्ट' नीति और पश्चिमी देशों, विशेषकर संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ संबंधों में प्रगाढ़ता की शुरुआत हुई। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, विदेश मंत्री **एस. जयशंकर** ने अपनी पुस्तक 'The India Way' में रेखांकित किया है कि:

"आज का भारत एक 'सॉफ्ट स्टेट' के बजाय एक 'सशक्त शक्ति' (Leading Power) के रूप में उभरना चाहता है, जो वैश्विक नियमों का केवल पालन ही नहीं करता, बल्कि उन्हें आकार देने की क्षमता भी रखता है।"

प्रस्तुत शोध पत्र इसी ऐतिहासिक यात्रा का विश्लेषण करता है कि कैसे भारत ने अपने 'राष्ट्रीय हितों'—जैसे क्षेत्रीय अखंडता, ऊर्जा सुरक्षा, और आर्थिक विकास—के संरक्षण हेतु समय-समय पर अपनी कूटनीतिक प्राथमिकताओं को बदला है, जबकि अपने मूल सिद्धांतों को निरंतर बनाए रखा है। यह अध्ययन विशेष रूप से इस बात की पड़ताल करेगा कि समकालीन वैश्विक व्यवस्था में, जहाँ 'हिंद-प्रशांत' क्षेत्र नया संघर्ष बिंदु बन गया है, भारत की कूटनीति किस प्रकार 'विश्व मित्र' और 'ग्लोबल साउथ' की आवाज के रूप में स्वयं को स्थापित कर रही है।

2. शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का मुख्य ध्येय भारतीय विदेश नीति के क्रमिक विकास का विश्लेषण करना है। इस अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- **ऐतिहासिक विकास का विश्लेषण:** स्वतंत्रता प्राप्ति (1947) से लेकर वर्तमान (2026) तक भारत की विदेश नीति के विभिन्न चरणों का गहन ऐतिहासिक अध्ययन करना।
- **निरंतरता और परिवर्तन की पहचान:** उन मूलभूत सिद्धांतों (जैसे गुटनिरपेक्षता, रणनीतिक स्वायत्तता) की पहचान करना जो

निरंतर बने रहे, और उन मोड़ों का विश्लेषण करना जहाँ वैश्विक दबावों के कारण नीति में 'पैराडाइम शिफ्ट' (Paradigm Shift) आया।

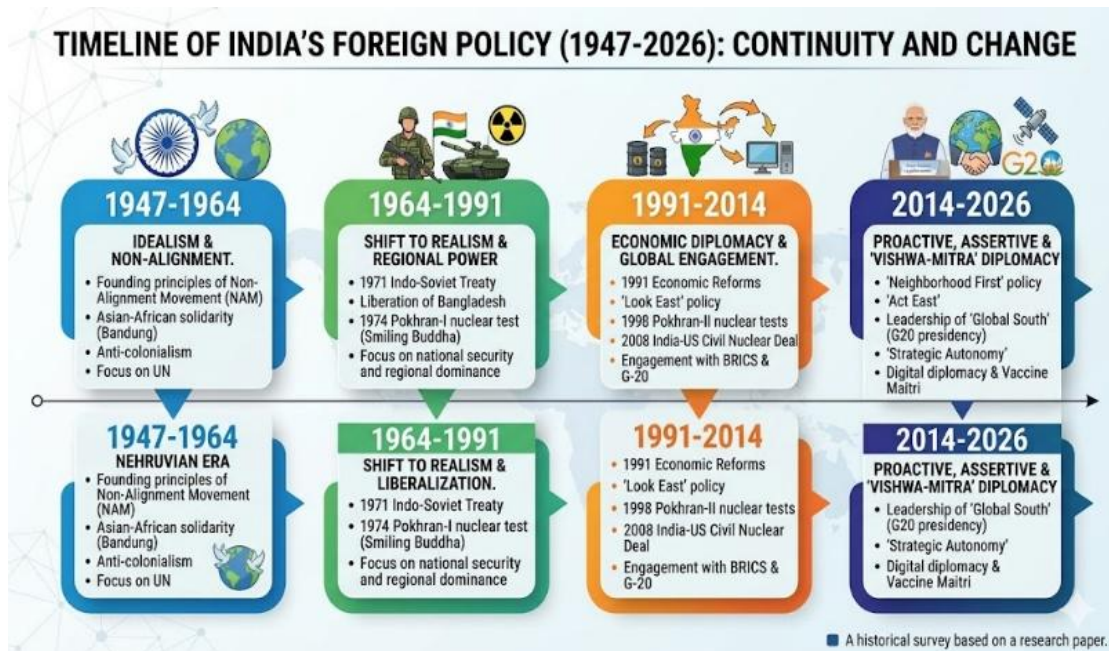
- **राष्ट्रीय हितों का मूल्यांकन:** यह पड़ताल करना कि भारत ने अपनी संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता और आर्थिक विकास जैसे 'राष्ट्रीय हितों' को सुरक्षित रखने के लिए कूटनीति का उपयोग किस प्रकार किया है।
- **समकालीन प्रासंगिकता:** वर्तमान बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत की 'विश्व-मित्र' और 'ग्लोबल साउथ' के नेता के रूप में उभरती भूमिका का मूल्यांकन करना।
- **चुनौतियों का अध्ययन:** हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन के उदय और रूस-यूक्रेन जैसे वैश्विक संघर्षों के बीच भारत के कूटनीतिक संतुलन की सीमाओं और संभावनाओं को समझना।

3. शोध की कार्यविधि

किसी भी ऐतिहासिक शोध की विश्वसनीयता उसकी कार्यविधि पर निर्भर करती है। इस शोध पत्र को तैयार करने के लिए निम्नलिखित पद्धति अपनाई गई है:

- **ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक पद्धति (Historical and Analytical Method):** चूँकि यह विषय समय के साथ हुए बदलावों पर आधारित है, इसलिए ऐतिहासिक घटनाओं का कालानुक्रमिक अध्ययन करते हुए उनका विश्लेषणात्मक परीक्षण किया गया है।
- **द्वितीयक डेटा का उपयोग (Use of Secondary Data):** यह शोध मुख्य रूप से द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। इसमें प्रतिष्ठित विद्वानों की पुस्तकों, अकादमिक जर्नल्स (Scopus और UGC CARE लिस्टेड), और शोध पत्रों का गहन अध्ययन किया गया है।
- **आधिकारिक दस्तावेजों का सर्वेक्षण:** भारत सरकार के **विदेश मंत्रालय (MEA)** की वार्षिक रिपोर्टें, प्रधानमंत्रियों के आधिकारिक भाषणों, और अंतरराष्ट्रीय संधियों (जैसे 1971 की भारत-सोवियत संधि, भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु समझौता) को आधार बनाया गया है।
- **तुलनात्मक दृष्टिकोण:** विभिन्न प्रधानमंत्रियों (नेहरू युग, इंदिरा गांधी युग, उदारीकरण का दौर और वर्तमान मोदी युग) के कार्यकाल के दौरान अपनाई गई कूटनीति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है ताकि 'निरंतरता और परिवर्तन' के प्रतिमान को स्पष्ट किया जा सके।
- **गुणात्मक शोध (Qualitative Research):** यह शोध सांख्यिकीय आँकड़ों के बजाय विचारों, सिद्धांतों और रणनीतिक निर्णयों के गुणात्मक विश्लेषण पर केंद्रित है।

ऐतिहासिक कालखंड: निरंतरता और परिवर्तन के चरण



व्याख्या:

यह चार्ट भारतीय विदेश नीति की यात्रा को 'निरंतरता और परिवर्तन' (Continuity and Change) के प्रतिमान पर आधारित करता है। यह स्पष्ट करता है कि कैसे भारत ने अपने मूल सिद्धांतों को बनाए रखते हुए, बदलते वैश्विक परिदृश्यों के अनुसार अपनी रणनीतियों को ढाला है।

इन्हें चार कालखंडों में बांटा गया है :

1. 1947-1964: आदर्शवाद और गुटनिरपेक्षता (Nehruvian Era)

- व्याख्या: स्वतंत्रता के पश्चात का यह पहला दौर पूरी तरह से 'नेहरूवादी आदर्शवाद' से प्रेरित था। चार्ट के अनुसार, भारत ने 'शीतयुद्ध' (Cold War) के दो गुटों से दूर रहकर गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) और 'पंचशील' के सिद्धांतों को अपनाया। मुख्य जोर एशियाई-अफ्रीकी एकता, उपनिवेशवाद के विरोध और संयुक्त राष्ट्र (UN) पर था।

2. 1964-1991: यथार्थवाद और क्षेत्रीय शक्ति का उदय

- व्याख्या: यह दौर नेहरू युग के आदर्शवाद से हटकर 'सामरिक यथार्थवाद' (Strategic Realism) की ओर झुकाव को दर्शाता है। इस दौरान भारत ने अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा और क्षेत्रीय प्रभुत्व (Regional Dominance) पर ध्यान दिया। इसके प्रमुख प्रमाण 1971 की भारत-सोवियत संधि, बांग्लादेश की स्वतंत्रता और 1974 का पहला परमाणु परीक्षण ('स्माइलिंग बुद्धा') हैं।

3. 1991-2014: आर्थिक कूटनीति और बहुध्रुवीयता

- व्याख्या: 1991 के आर्थिक उदारीकरण ने विदेश नीति को एक नया मोड़ दिया। चार्ट दिखाता है कि अब मुख्य केंद्र बिंदु 'आर्थिक कूटनीति' (Economic Diplomacy) और वैश्विक

अर्थव्यवस्था में एकीकरण बन गया। 'लुक ईस्ट' नीति, 1998 के परमाणु परीक्षण और अमेरिका के साथ असैन्य परमाणु समझौते ने भारत को परमाणु क्लब और G-20 जैसे महत्वपूर्ण वैश्विक मंचों पर स्थापित किया।

4. 2014-2026: सक्रिय, मुखर और 'विश्व-मित्र' कूटनीति (मोदी युग)

- व्याख्या: वर्तमान दौर भारतीय विदेश नीति की सक्रियता (Proactiveness) और मुखरता (Assertiveness) का प्रतीक है। चार्ट के अनुसार, भारत अब 'विश्व मित्र' और 'ग्लोबल साउथ' (विकासशील देशों) के नेता के रूप में उभरना चाहता है। 'नेबरहुड फर्स्ट', 'एक्ट ईस्ट', 'रणनीतिक स्वायत्तता' (Strategic Autonomy), G20 की सफल अध्यक्षता, और डिजिटल व वैक्सीन कूटनीति इसके प्रमुख स्तंभ हैं।

उपरोक्त कालखंडों की विस्तृत व्याख्या:

अ) नेहरू युग और आदर्शवाद (1947-1964)

स्वतंत्रता के पश्चात भारत की विदेश नीति का निर्माण एक ऐसे दौर में हुआ जब विश्व द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका से उबर रहा था और 'शीतयुद्ध' के दो ध्रुवीय गुटों में विभाजित हो चुका था। इस कालखंड को मुख्य रूप से 'नेहरूवादी युग' कहा जाता है, क्योंकि प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू न केवल देश के मुख्य कार्यकारी थे, बल्कि वे स्वयं भारत के विदेश मंत्री भी थे। उनके विचारों ने भारतीय विदेश नीति को एक 'नैतिक और आदर्शवादी' स्वरूप प्रदान किया।

इस युग के प्रमुख स्तंभों को निम्नलिखित उप-खंडों में विभाजित किया जा सकता है:

(i) गुटनिरपेक्षता की नीति

नेहरू युग की सबसे बड़ी विशेषता 'गुटनिरपेक्षता' थी। भारत ने स्पष्ट किया कि वह अमेरिका (पूँजीवादी गुट) या सोवियत संघ (साम्यवादी गुट) में से किसी का भी पिछलग्गू नहीं बनेगा। यह केवल तटस्थता नहीं थी, बल्कि एक सक्रिय स्वतंत्र नीति थी।

नेहरू ने 1946 में अपने एक रेडियो संबोधन में कहा था:

"हम जहाँ तक संभव हो, उन शक्तियों के गुटों से दूर रहना चाहते हैं जो एक-दूसरे के विरुद्ध खड़े हैं... हमारा उद्देश्य सभी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखना है।"

इस नीति का उद्देश्य भारत की नव-प्राप्त स्वतंत्रता को सुरक्षित रखना और विकास के लिए दोनों गुटों से सहायता प्राप्त करना था।

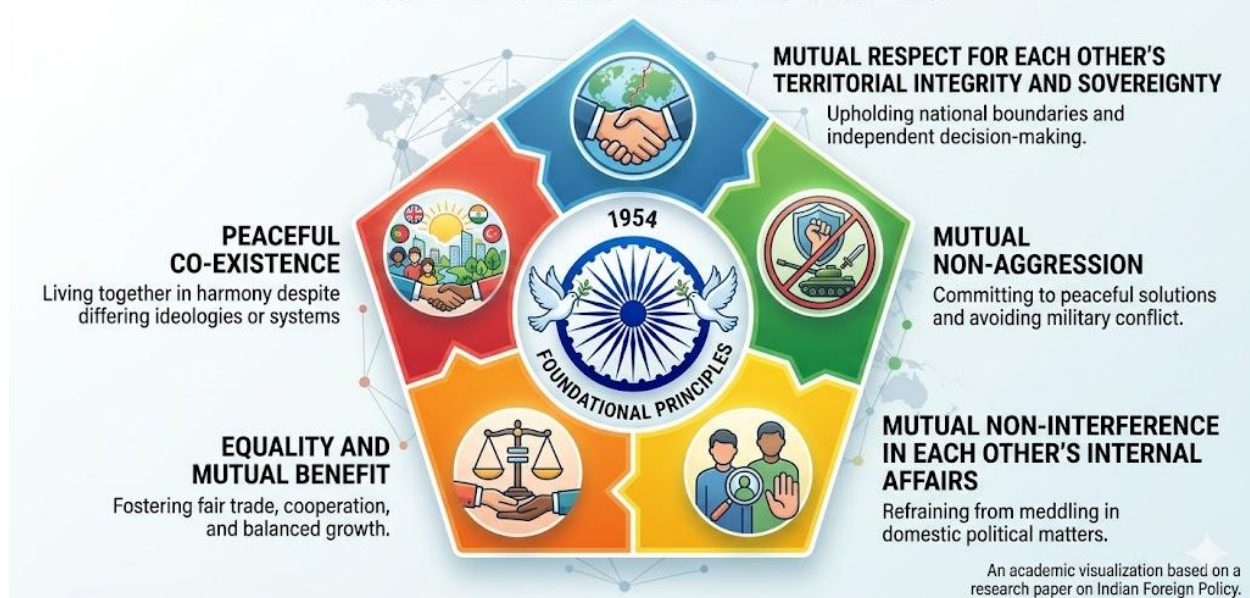
(ii) पंचशील के सिद्धांत (1954)

1954 में भारत और चीन के बीच हुए समझौते में 'पंचशील' (आचरण के पांच नियम) को वैश्विक कूटनीति के एक आदर्श मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया गया। ये सिद्धांत थे:

1. एक-दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता का सम्मान।
2. परस्पर अनाक्रमण।
3. एक-दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना।
4. समानता और परस्पर लाभ।
5. शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व।

यह भारत की उस समय की 'आदर्शवादी' सोच का परिचायक था, जिसमें युद्ध के बजाय संवाद और नैतिक मूल्यों को प्राथमिकता दी गई थी।

PANCHSHEEL (PANCHSHEEL DOCTRINE): THE FIVE PRINCIPLES OF PEACEFUL CO-EXISTENCE (1954) A CORE PILLAR OF NEHRUVIAN FOREIGN POLICY & IDEALISM



व्याख्या:

यह आरेख एक पेंटागन (Pentagon - पांच भुजाओं वाली आकृति) के माध्यम से 1954 में प्रतिपादित पंचशील के पांचों सिद्धांतों को दर्शाता है। यह स्पष्ट करता है कि नेहरू युग में भारत की विदेश नीति किस प्रकार **आदर्शवाद (Idealism)** और वैश्विक शांति पर केंद्रित थी।

यहाँ पांचों स्तंभों का संक्षिप्त विश्लेषण है:

1. संप्रभुता का सम्मान (Mutual Respect for Sovereignty):

- **व्याख्या:** यह सिद्धांत चार्ट के सबसे ऊपरी हिस्से में है। इसका अर्थ है कि हर देश, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, अपनी सीमाओं और स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता का मालिक है। भारत किसी भी अन्य देश की आंतरिक स्वायत्तता का सम्मान करेगा।

2. अनाक्रमण (Mutual Non-aggression):

- **व्याख्या:** यह स्तंभ दर्शाता है कि भारत युद्ध के बजाय संवाद और शांतिपूर्ण कूटनीति पर विश्वास करता है। इसका मतलब है कि भारत कभी भी किसी अन्य देश पर पहला हमला नहीं करेगा।

3. अहस्तक्षेप (Mutual Non-interference):

- **व्याख्या:** यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि भारत किसी भी अन्य देश के 'आंतरिक मामलों' (जैसे घरेलू राजनीति या सामाजिक व्यवस्था) में हस्तक्षेप नहीं करेगा। यह 'जीने दो और स्वयं जिओ' (Live and Let Live) के दर्शन का हिस्सा है।

4. समानता (Equality and Mutual Benefit):

- **व्याख्या:** यह स्तंभ दर्शाता है कि सभी देश अंतरराष्ट्रीय स्तर पर समान हैं। भारत किसी भी देश के साथ संबंध बनाते समय केवल

अपना फायदा नहीं देखेगा, बल्कि 'परस्पर लाभ' और fair-play को प्राथमिकता देगा।

5. शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व (Peaceful Co-existence):

- **व्याख्या:** यह पंचशील का अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत है। इसका अर्थ है कि अलग-अलग राजनीतिक या सामाजिक विचारधाराओं (जैसे पूँजीवाद और साम्यवाद) वाले देश भी दुनिया में शांति से एक साथ रह सकते हैं।

(iii) उपनिवेशवाद और रंगभेद का विरोध (Anti-Colonialism)

भारत ने संयुक्त राष्ट्र (UN) और अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों पर एशिया और अफ्रीका के देशों की स्वतंत्रता का पुरजोर समर्थन किया। 1955 का बांडुंग सम्मेलन इसका चरमोत्कर्ष था, जहाँ 'एशियाई-अफ्रीकी एकता' का नारा दिया गया। नेहरू का मानना था कि जब तक दुनिया में उपनिवेशवाद रहेगा, भारत की स्वतंत्रता भी सुरक्षित नहीं है।

(iv) अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में विश्वास

नेहरू युग की कूटनीति में संयुक्त राष्ट्र (UN) के प्रति गहरा सम्मान और विश्वास देखा गया। कश्मीर मुद्दे को UN में ले जाना इसी आदर्शवाद का हिस्सा था, जहाँ भारत को उम्मीद थी कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय न्यायपूर्ण निर्णय लेगा। हालांकि, बाद में इसे एक रणनीतिक चूक के रूप में भी देखा गया।

(v) आदर्शवाद की चुनौतियाँ और 1962 का मोड़

नेहरू की नीति की सबसे बड़ी आलोचना यह कहकर की गई कि इसमें सैन्य शक्ति (Hard Power) की अनदेखी की गई। 1962 में चीन के साथ हुए युद्ध ने इस 'आदर्शवादी' ढाँचे को गहरा आघात पहुँचाया।

उद्धरण: कूटनीतिक इतिहासकार **रामचंद्र गुहा** ने अपनी पुस्तक '*India After Gandhi*' में लिखा है:

"1962 की पराजय ने नेहरू के उस विश्वास को तोड़ दिया कि नैतिक प्रभाव और पंचशील जैसे सिद्धांत किसी राष्ट्र की सुरक्षा की गारंटी दे सकते हैं।"

इस युद्ध के बाद भारतीय विदेश नीति में 'यथार्थवाद' (Realism) का समावेश होने लगा, जिसकी परिणति आगे चलकर इंदिरा गांधी के कालखंड में दिखाई दी।

नेहरू युग ने भारत को एक 'नैतिक शक्ति' (Moral Power) के रूप में वैश्विक पहचान दिलाई। भले ही 1962 में इसे सैन्य विफलता का सामना करना पड़ा, लेकिन गुटनिरपेक्षता के जिस बीज को नेहरू ने बोया था, वह आज भी भारतीय विदेश नीति में 'सामरिक स्वायत्तता' के रूप में जीवित है।

ब) यथार्थवाद की ओर झुकाव (1964-1991)

नेहरू युग के आदर्शवाद के बाद, भारतीय विदेश नीति में एक स्पष्ट और कठोर 'यथार्थवादी' (Realism) मोड़ आया। 1964 से 1991 का यह कालखंड भारतीय इतिहास में सामरिक शक्ति के संचय और क्षेत्रीय प्रभुत्व (Regional Hegemony) की स्थापना का युग माना जाता है। इस दौरान भारत ने यह समझ लिया कि अंतरराष्ट्रीय राजनीति में केवल नैतिक प्रभाव पर्याप्त नहीं है, बल्कि राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए सैन्य और रणनीतिक शक्ति अनिवार्य है।

इस खंड के प्रमुख उप-बिंदु निम्नलिखित हैं:

(i) शक्ति संतुलन और सामरिक यथार्थवाद (Strategic Realism)

1962 के चीन युद्ध और 1965 के पाकिस्तान युद्ध ने भारत को अपनी रक्षा तैयारियों के प्रति सचेत कर दिया। लाल बहादुर शास्त्री के संक्षिप्त कार्यकाल के बाद, **इंदिरा गांधी** के नेतृत्व में भारत ने 'शक्ति की राजनीति' (Power Politics) को अपनाया।

उद्धरण: प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञ **सी. राजामोहन** के अनुसार:

"इंदिरा गांधी ने नेहरू के वैश्विक आदर्शवाद को त्यागकर 'राष्ट्रीय सुरक्षा' को विदेश नीति का प्राथमिक केंद्र बनाया। उनके लिए कूटनीति का अर्थ राष्ट्रीय शक्ति का प्रदर्शन था।"

(ii) 1971 का बांग्लादेश संकट और 'भारत-सोवियत संधि'

यह कालखंड भारतीय कूटनीति की सबसे बड़ी जीत का गवाह बना। अमेरिका और चीन के पाकिस्तान की ओर झुकाव को देखते हुए, भारत ने अपनी 'गुटनिरपेक्षता' की पारंपरिक व्याख्या को बदलते हुए 1971 में **सोवियत संघ के साथ 'शांति, मित्रता और सहयोग की संधि'** की।

- **महत्व:** यह संधि भारत के 'यथार्थवाद' का चरम बिंदु थी, जिसने अमेरिका के 'सातवें बेड़े' (Seventh Fleet) के खतरे को बेअसर कर दिया और दक्षिण एशिया का मानचित्र बदल दिया।
- **परिणाम:** 1971 के युद्ध में जीत ने भारत को दक्षिण एशिया की एक निर्विवाद 'क्षेत्रीय शक्ति' (Regional Power) के रूप में स्थापित कर दिया।

(iii) परमाणु नीति और 'पोखरण-1' (1974)

मई 1974 में भारत ने राजस्थान के पोखरण में अपना पहला सफल परमाणु परीक्षण (स्माइलिंग बुद्धा) किया। यद्यपि भारत ने इसे 'शांतिपूर्ण परमाणु विस्फोट' (PNE) कहा, लेकिन इसका संदेश स्पष्ट था—भारत अब परमाणु क्लब के बाहर रहकर केवल उपदेश देने वाला देश नहीं रहेगा। यह निर्णय पूरी तरह से 'यथार्थवादी' हितों से प्रेरित था ताकि चीन और पाकिस्तान के संभावित परमाणु खतरे को संतुलित किया जा सके।

(iv) क्षेत्रीय प्रभुत्व और 'इंदिरा डॉक्ट्रिन'

1980 के दशक तक, भारत की नीति अपने पड़ोसियों के प्रति अधिक 'हस्तक्षेपवादी' हो गई थी, जिसे कई विद्वान **'इंदिरा डॉक्ट्रिन'** कहते हैं। इसके तहत:

- सिक्किम का भारत में विलय (1975)।
- श्रीलंका में भारतीय शांति सेना (IPKF) भेजना (1987)।
- मालदीव में 'ऑपरेशन कैक्टस' के जरिए तख्तापलट को रोकना (1988)।

ये घटनाएँ दर्शाती हैं कि भारत ने दक्षिण एशिया को अपना 'प्रभाव क्षेत्र' (Sphere of Influence) मान लिया था और वह बाहरी शक्तियों के हस्तक्षेप को बर्दाश्त करने के पक्ष में नहीं था।

(v) अफ़गानिस्तान संकट और कूटनीतिक संतुलन

1979 में सोवियत संघ के अफ़गानिस्तान में प्रवेश ने भारत के सामने बड़ी चुनौती पेश की। भारत ने सोवियत संघ की सार्वजनिक निंदा नहीं की (जो कि यथार्थवादी हितों और सोवियत मित्रता के कारण था), लेकिन निजी तौर पर सेना की वापसी पर जोर दिया। यह भारत की 'रणनीतिक स्वायत्तता' को बनाए रखने का प्रयास था।

1964 से 1991 के बीच भारत की विदेश नीति 'सिद्धांतों' से हटकर 'परिणामों' की ओर मुड़ गई। जैसा कि **के. सुब्रमण्यम** (प्रसिद्ध सामरिक विश्लेषक) ने अक्सर कहा है कि इस काल में भारत ने अपनी रक्षा नीतियों को विदेश नीति के साथ एकीकृत किया। हालांकि, 1990 के दशक की शुरुआत तक पहुँचते-पूँचते, सोवियत संघ के पतन और भारत के आर्थिक संकट ने एक और बड़े 'परिवर्तन' की भूमिका तैयार कर दी थी।

स) उदारीकरण और बहुध्रुवीय विश्व (1991-2014)

1991 का वर्ष भारतीय विदेश नीति के लिए एक '**पैराडाइम शिफ्ट**' (**Paradigm Shift**) का काल था। सोवियत संघ के विघटन के साथ 'शीतयुद्ध' समाप्त हो गया और भारत एक गंभीर आर्थिक संकट (Balance of Payments crisis) से जूझ रहा था। इन परिस्थितियों ने भारत को अपनी पारंपरिक गुटनिरपेक्षता की नीति को पुनर्गठित करने और 'आर्थिक कूटनीति' (Economic Diplomacy) को प्राथमिकता देने पर मजबूर किया।

इस कालखंड के प्रमुख घटनाक्रमों को निम्नलिखित विस्तृत खंडों में समझा जा सकता है:

(i) सोवियत संघ का पतन और 'रणनीतिक पुनर्संतुलन'

1991 में सोवियत संघ के बिखराव ने भारत के सबसे विश्वसनीय सुरक्षा भागीदार को छीन लिया। इसके उत्तर में भारत ने अपनी कूटनीति को 'एकध्रुवीय विश्व' (Unipolar World) की वास्तविकता, यानी अमेरिका के प्रभुत्व के साथ तालमेल बिठाने की ओर मोड़ा।

उद्धरण: पूर्व प्रधानमंत्री **पी.वी. नरसिम्हा राव** ने संसद में कहा था:

"परिवर्तित विश्व व्यवस्था में, हमें अपनी विदेश नीति को अपनी आर्थिक आवश्यकताओं और वैश्विक वास्तविकताओं के साथ जोड़ना होगा।"

(ii) 'लुक ईस्ट' नीति (Look East Policy - 1991)

दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों (ASEAN) के साथ ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों को आर्थिक साझेदारी में बदलने के लिए नरसिम्हा राव सरकार ने 'लुक ईस्ट' नीति की शुरुआत की।

- **उद्देश्य:** साम्यवाद के पतन के बाद नए बाजारों की खोज करना और भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के विकास को गति देना।
- यह नीति दर्शाती है कि भारत अब केवल पश्चिम या रूस की ओर नहीं, बल्कि अपने निकटतम पड़ोसियों के साथ व्यापारिक हितों को भी 'राष्ट्रीय हित' का हिस्सा मान रहा था।

(iii) 'गुजराल डॉक्ट्रिन' और पड़ोसी प्रथम (1996-1998)

1990 के दशक के मध्य में विदेश मंत्री (बाद में प्रधानमंत्री) **इंद्र कुमार गुजराल** ने एक अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांत प्रतिपादित किया, जिसे 'गुजराल डॉक्ट्रिन' कहा जाता है।

- **सिद्धांत:** भारत अपने छोटे पड़ोसी देशों (नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका) के साथ संबंधों में 'पारस्परिकता' (Reciprocity) की शर्त नहीं रखेगा, बल्कि एक बड़े भाई के रूप में एकतरफा रियायतें देगा।
- **उद्देश्य:** दक्षिण एशिया में विश्वास की कमी को दूर करना और क्षेत्रीय शांति स्थापित करना।

(iv) पोखरण-II और परमाणु शक्ति के रूप में उदय (1998)

मई 1998 में **अटल बिहारी वाजपेयी** सरकार द्वारा किए गए परमाणु परीक्षणों ने विश्व राजनीति में भारत के कद को पूरी तरह बदल दिया। यद्यपि भारत पर कड़े अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंध लगाए गए, लेकिन भारत ने 'न्यूनतम विश्वसनीय निवारण' (Minimum Credible Deterrence) और 'पहले प्रयोग न करने' (No First Use) की नीति की घोषणा की। **उद्धरण:** **वाजपेयी जी** ने अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन को लिखे पत्र में स्पष्ट किया था:

"हमारे पड़ोस में बढ़ते परमाणु खतरे और असुरक्षित वातावरण ने हमें अपनी सुरक्षा के लिए यह कठिन निर्णय लेने पर मजबूर किया है।"

(v) भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु समझौता (2005-2008)

प्रधानमंत्री **मनमोहन सिंह** के कार्यकाल में 2005 में शुरू हुआ '123 समझौता' भारतीय विदेश नीति का एक ऐतिहासिक मोड़ था। इसने भारत को परमाणु 'अछूत' की श्रेणी से बाहर निकालकर वैश्विक मुख्यधारा में शामिल कर दिया।

- **महत्व:** अमेरिका ने भारत को बिना परमाणु अप्रसार संधि (NPT) पर हस्ताक्षर किए एक परमाणु शक्ति के रूप में मान्यता दे दी। यह भारत की बढ़ती आर्थिक और सामरिक शक्ति का अंतरराष्ट्रीय स्वीकार था।

(vi) बहुध्रुवीय विश्व और नए मंचों का उदय

2000 के दशक में भारत ने 'बहुध्रुवीयता' (Multipolarity) का समर्थन करते हुए नए अंतरराष्ट्रीय समूहों में सक्रिय भागीदारी शुरू की:

- **BRICS:** ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका का समूह, जो पश्चिमी प्रभुत्व को चुनौती देता है।
- **G-20:** वैश्विक आर्थिक निर्णयों में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका।
- **IBSA:** भारत, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका के बीच सहयोग।

1991 से 2014 के बीच भारतीय विदेश नीति 'रक्षात्मक' से 'सकारात्मक' और 'आर्थिक केंद्रित' हो गई। भारत ने अमेरिका के साथ अपने संबंधों को रणनीतिक स्तर पर पहुँचाया, जबकि रूस के साथ अपनी पुरानी मित्रता को बनाए रखा और चीन के साथ व्यापारिक संबंधों को बढ़ावा दिया (भले ही सीमा विवाद बना रहा)। कूटनीतिक विद्वान **हर्ष वी. पंत** के शब्दों में, *"इस दौर में भारत ने एक 'बैलेंसिंग पावर' से 'लीडिंग पावर' की ओर अपनी यात्रा शुरू की।"*

द) वर्तमान परिदृश्य: सक्रिय और मुखर कूटनीति (2014-2026)

2014 से 2026 के बीच का कालखंड भारतीय विदेश नीति के इतिहास में '**सक्रियता**' (**Proactiveness**) और '**मुखरता**' (**Assertiveness**) के लिए जाना जाता है। इस दौर में भारत ने अपनी पारंपरिक रक्षात्मक मुद्रा को छोड़कर एक 'अग्रणी शक्ति' और 'विश्व मित्र' के रूप में स्वयं को स्थापित करने का प्रयास किया है।



व्याख्या (Interpretation of the Chart):

यह आरेख दर्शाता है कि वर्तमान दौर में भारत की विदेश नीति केवल एक या दो मुद्दों पर केंद्रित नहीं है, बल्कि यह कई महत्वपूर्ण स्तंभों पर आधारित एक 'समग्र दृष्टिकोण' है। चार्ट के केंद्र में भारत है, जिससे आठ प्रमुख रणनीतिक दिशाएँ निकलती हैं:

1. पड़ोसी प्रथम (Neighbourhood First):

- व्याख्या:** यह सबसे पहला और मुख्य स्तंभ है। इसका उद्देश्य अपने निकटतम पड़ोसियों (जैसे नेपाल, श्रीलंका, बांग्लादेश) के साथ आर्थिक, भौतिक और भावनात्मक जुड़ाव (Connectivity & Mutual Trust) को बढ़ाना है। यह संकट के समय भारत की 'त्वरित प्रतिक्रिया' (Crisis Support) को भी रेखांकित करता है।

2. एक्ट ईस्ट नीति (Act East Policy):

- व्याख्या:** यह 'लुक ईस्ट' का उन्नत संस्करण है, जहाँ मुख्य जोर केवल व्यापार पर नहीं, बल्कि रक्षा संबंधों (Defense Ties) और सुरक्षा साझेदारी पर भी है, विशेषकर दक्षिण-पूर्व एशिया (ASEAN) के देशों के साथ।

3. ग्लोबल साउथ का नेतृत्व (Global South Leadership):

- व्याख्या:** यह चार्ट भारत की उभरी हुई भूमिका को 'विकासशील देशों की आवाज' (Voice of Developing Nations) के रूप में दर्शाता है। G20 की अध्यक्षता के दौरान अफ्रीकी संघ (AU) को शामिल कराना और ग्लोबल साउथ की चिंताओं को वैश्विक मंच पर उठाना इसका मुख्य प्रमाण है।

4. सामरिक स्वायत्तता (Strategic Autonomy):

- व्याख्या:** यह भारत की उस क्षमता को दिखाता है जहाँ वह किसी भी महाशक्ति के दबाव में आए बिना, अपने राष्ट्रीय हितों

के आधार पर 'स्वतंत्र निर्णय' (Independent Decision-making) लेता है। यह भारत की 'बहु-संरेखण' (Multi-alignment - जैसे QUAD और BRICS दोनों में होना) की नीति का आधार है।

5. डिजिटल कूटनीति और नवाचार (Digital Diplomacy & Innovation):

- व्याख्या:** यह एक नया और आधुनिक स्तंभ है। भारत अपने 'डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर' (जैसे UPI, CoWIN) को दुनिया के साथ साझा कर रहा है। यह तकनीक और अंतरिक्ष सहयोग (Space Collaboration) के माध्यम से भारत की नई पहचान बना रहा है।

6. सॉफ्ट पावर और संस्कृति (Soft Power & Culture):

- व्याख्या:** यह भारत की सांस्कृतिक विरासत का विदेश नीति के औजार के रूप में उपयोग है। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस, आयुर्वेद का प्रसार, और दुनिया भर में फैले 'भारतीय प्रवासियों' (Indian Diaspora) के साथ जुड़ाव भारत की 'अहिंसक और मित्रवत' छवि को पुख्ता करता है।

7. ऊर्जा सुरक्षा और सतत विकास (Energy Security & Sustainability):

- व्याख्या:** यह स्तंभ दिखाता है कि भारत अपने आर्थिक विकास के लिए ऊर्जा के स्रोतों में विविधता ला रहा है। साथ ही, 'अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन' (ISA) जैसे प्रयासों के माध्यम से वह 'नवीकरणीय ऊर्जा' (Renewable Energy) के क्षेत्र में एक वैश्विक नेता के रूप में उभर रहा है।

8. संयुक्त राष्ट्र में सुधार और नियम-निर्धारण (UN Reform & Rule-making):

- **व्याख्या:** यह चार्ट भारत की उस आकांक्षा को दर्शाता है जहाँ वह वैश्विक नियमों का पालन करने वाला मात्र एक देश नहीं, बल्कि उन्हें 'आकार देने वाला' (Rule-shaper) देश बनना चाहता है। यह संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) में सुधार और वैश्विक स्तर पर एक न्यायपूर्ण व्यवस्था के लिए भारत के संघर्ष को दिखाता है।

इस खंड का विस्तृत विश्लेषण निम्नलिखित उप-बिंदुओं के माध्यम से किया जा सकता है:

(i) 'पड़ोसी प्रथम' (Neighborhood First) और क्षेत्रीय एकात्मकता

2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शपथ ग्रहण समारोह में सार्क (SAARC) देशों के राष्ट्राध्यक्षों को आमंत्रित करना इस नीति की औपचारिक शुरुआत थी। इसका मूल उद्देश्य दक्षिण एशिया में भारत की केंद्रीय भूमिका को मजबूत करना और आर्थिक व भौतिक जुड़ाव (Connectivity) को बढ़ाना है।

उद्धरण: विदेश मंत्रालय की 2023 की रिपोर्ट के अनुसार:

"पड़ोसी प्रथम नीति का अर्थ केवल भौगोलिक निकटता नहीं, बल्कि विश्वास, सम्मान और पारस्परिक लाभ पर आधारित साझा समृद्धि है।"

- **उदाहरण:** नेपाल, बांग्लादेश और श्रीलंका को संकट के समय (जैसे 2015 का भूकंप या हालिया आर्थिक संकट) प्रदान की गई त्वरित सहायता इस नीति के 'मानवीय' और 'परिणामोन्मुखी' पक्ष को दर्शाती है।

(ii) 'लुक ईस्ट' से 'एक्ट ईस्ट' (Act East Policy) का परिवर्तन

2014 में म्यांमार में आयोजित आसियान (ASEAN) शिखर सम्मेलन के दौरान 'लुक ईस्ट' नीति को 'एक्ट ईस्ट' में बदला गया।

- **परिवर्तन:** जहाँ पहले जोर केवल व्यापार पर था, अब सुरक्षा, रक्षा और बुनियादी ढाँचे (जैसे भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग) पर भी समान ध्यान दिया जा रहा है।
- **रणनीतिक महत्व:** वियतनाम और फिलीपींस जैसे देशों के साथ रक्षा संबंधों (ब्रह्मोस मिसाइल सौदा) का विस्तार चीन के बढ़ते क्षेत्रीय प्रभाव को संतुलित करने का प्रयास है।

(iii) बहु-संरेखण और रणनीतिक स्वायत्तता (multi-alignment)

वर्तमान भारत अब किसी एक गुट का हिस्सा बनने के बजाय 'बहु-संरेखण' की नीति अपनाता है। भारत एक ओर अमेरिका के साथ QUAD (भारत, अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया) में शामिल है, तो दूसरी ओर रूस और चीन के साथ BRICS और SCO जैसे मंचों पर भी सक्रिय है।

उद्धरण: विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने अपनी पुस्तक 'The India Way' में तर्क दिया है:

"यह एक ऐसी दुनिया है जहाँ हमें अमेरिका को साथ लेकर चलना है, चीन का प्रबंधन करना है, यूरोप की खेती करनी है, रूस को आश्वस्त करना है और जापान को खेल में लाना है।"

(iv) 'ग्लोबल साउथ' (Global South) की आवाज और G20 की अध्यक्षता

2023 में भारत द्वारा G20 की सफल अध्यक्षता ने भारत को विकासशील और अल्पविकसित देशों (ग्लोबल साउथ) के एकमात्र प्रवक्ता के रूप में उभारा। अफ्रीकी संघ (African Union) को G20 का स्थायी सदस्य बनाना भारत की कूटनीतिक जीत का सबसे बड़ा प्रमाण है।

- **वैश्विक योगदान:** 'वैक्सीन मैत्री' के माध्यम से 100 से अधिक देशों को COVID-19 टीके पहुँचाना भारत की 'विश्व मित्र' वाली छवि को पुख्ता करता है।

(v) कूटनीति के नए आयाम: डिजिटल और सांस्कृतिक शक्ति

- **डिजिटल कूटनीति:** 'इंडिया स्टैक' (UPI, कोविन) को अन्य देशों (जैसे यूएई, नेपाल, सिंगापुर) के साथ साझा करना भारत की नई 'सॉफ्ट पावर' है।

- **सांस्कृतिक कूटनीति:** अंतरराष्ट्रीय योग दिवस और आयुर्वेद का प्रसार भारत की सांस्कृतिक विरासत को विदेश नीति के औजार के रूप में उपयोग करने का प्रयास है।

2014-2026 के बीच भारत की विदेश नीति 'सिद्धांतवादी' से बढ़कर 'यथार्थ वादी और समाधान-प्रदाता' हो गई है। भारत अब वैश्विक नियमों का पालन करने वाला मात्र एक देश नहीं, बल्कि नियमों को आकार देने वाला (Rule Maker) देश बनने की ओर अग्रसर है।

वर्तमान चुनौतियाँ और कूटनीतिक समाधान

समकालीन भारतीय विदेश नीति के समक्ष मौजूद प्रमुख चुनौतियों और उनके समाधानों का ऐतिहासिक व रणनीतिक विश्लेषण निम्नलिखित है:

(i) चीन का उदय और सीमा विवाद (The China Challenge)

वर्तमान में भारत के लिए सबसे बड़ी सामरिक चुनौती चीन की विस्तारवादी नीति और वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) पर सैन्य गतिरोध है।

- **चुनौती:** लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश की सीमाओं पर तनाव, और हिंद महासागर में चीन की 'स्ट्रिंग ऑफ पर्स' (String of Pearls) रणनीति।
- **कूटनीतिक समाधान:** भारत ने 'डबल ट्रैक' कूटनीति अपनाई है। एक तरफ सैन्य स्तर पर बुनियादी ढाँचे का विकास (Border Infrastructure) और दूसरी तरफ QUAD (भारत, अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया) जैसे समूहों के माध्यम से हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शक्ति संतुलन बनाना। भारत का संदेश स्पष्ट है कि सीमा पर शांति के बिना संबंध सामान्य नहीं हो सकते।

(ii) वैश्विक ध्रुवीकरण और रूस-यूक्रेन संघर्ष

रूस-यूक्रेन युद्ध ने भारत के सामने 'दोस्ती और सिद्धांतों' के बीच संतुलन साधने की कठिन चुनौती पेश की है।

- **चुनौती:** पश्चिमी देशों (अमेरिका/यूरोप) का दबाव कि भारत रूस की निंदा करे, जबकि रूस भारत का दीर्घकालिक रक्षा और ऊर्जा भागीदार है।

- **कूटनीतिक समाधान:** भारत ने 'रणनीतिक स्वायत्तता' (Strategic Autonomy) का परिचय दिया। भारत ने किसी भी गुट का पक्ष लेने के बजाय "शांति और संवाद" की वकालत की।

उद्धरण: प्रधानमंत्री मोदी का समरकंद (2022) में दिया गया बयान वैश्विक कूटनीति का मंत्र बन गया:

"आज का युग युद्ध का युग नहीं है (Today's era is not an era of war)।"

(iii) अस्थिर पड़ोस (Unstable Neighborhood)

भारत के पड़ोसी देशों—पाकिस्तान, अफगानिस्तान, म्यांमार और हाल ही में श्रीलंका व मालदीव—में राजनीतिक और आर्थिक अस्थिरता भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा को प्रभावित करती है।

- **चुनौती:** आतंकवाद, शरणार्थी समस्या और पड़ोसी देशों में बढ़ता चीनी निवेश।
- **कूटनीतिक समाधान:** भारत अपनी 'नेबरहुड फर्स्ट' (Neighborhood First) नीति के तहत एक 'नेट सिक्वोरिटी प्रोवाइडर' की भूमिका निभा रहा है। श्रीलंका को आर्थिक संकट से उबारने के लिए वित्तीय सहायता देना और अफगानिस्तान में मानवीय सहायता भेजना इसी 'सॉफ्ट कूटनीति' का हिस्सा है।

(iv) वैश्विक संस्थाओं का अप्रभावी होना (Dysfunctional Global Governance)

संयुक्त राष्ट्र (UN) और विश्व व्यापार संगठन (WTO) जैसी संस्थाएं वर्तमान संघर्षों और आर्थिक असमानताओं को सुलझाने में विफल दिख रही हैं।

- **चुनौती:** संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) में सुधार की कमी, जिससे भारत जैसी उभरती शक्तियों को उचित प्रतिनिधित्व नहीं मिल पा रहा।
- **कूटनीतिक समाधान:** भारत 'बहुपक्षवाद के सुधार' (Reformed Multilateralism) की वकालत कर रहा है। G20 की अध्यक्षता के दौरान 'ग्लोबल साउथ' की आवाज बनकर भारत ने यह सिद्ध किया कि वह वैश्विक एजेंडा तय करने की क्षमता रखता है।

(v) गैर-पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियां

- **चुनौती:** जलवायु परिवर्तन, साइबर सुरक्षा और ऊर्जा संकट।
- **कूटनीतिक समाधान:** भारत ने 'अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन' (ISA) और 'कोयलेशन फॉर डिजास्टर रेजिलिएंट इंफ्रास्ट्रक्चर' (CDRI) जैसे मंचों का नेतृत्व संभालकर 'समाधान प्रदाता' (Solution Provider) की छवि बनाई है।

चुनौतियों का कूटनीतिक सारांश

मुख्य चुनौती	कूटनीतिक समाधान
चीन का आक्रामक रुख	QUAD और 'एक्ट ईस्ट' नीति के जरिए संतुलन।
ऊर्जा और मुद्रास्फीति	रूस से तेल आयात और ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण।
पश्चिम बनाम रूस तनाव	रणनीतिक स्वायत्तता और राष्ट्रीय हित को प्राथमिकता।
डिजिटल संभ्रमता	'इंडिया स्टैक' और डिजिटल कूटनीति का वैश्विक प्रसार।

निष्कर्ष

भारतीय विदेश नीति के स्वतंत्रता पश्चात से लेकर वर्तमान (2026) तक के ऐतिहासिक सर्वेक्षण से यह स्पष्ट होता है कि भारत की अंतरराष्ट्रीय भूमिका में एक क्रमिक लेकिन अत्यंत प्रभावशाली बदलाव आया है। शोध के दौरान विश्लेषण किए गए विभिन्न कालखंडों के आधार पर निम्नलिखित मुख्य निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं:

(i) सिद्धांतों और व्यवहारिकता का संतुलन

भारत की विदेश नीति कभी भी पूरी तरह से 'आदर्शवादी' या पूरी तरह से 'यथार्थवादी' नहीं रही है। जहाँ नेहरू युग में 'पंचशील' और 'गुटनिरपेक्षता' ने भारत को एक नैतिक आधार प्रदान किया, वहीं इंदिरा गांधी से लेकर वर्तमान तक, भारत ने अपनी सुरक्षा और आर्थिक हितों के लिए 'यथार्थवादी' कूटनीति का सफलतापूर्वक प्रयोग किया है। निष्कर्षतः, भारत की नीति 'सिद्धांतवादी यथार्थवाद' (Principled Realism) की ओर बढ़ी है।

(ii) रणनीतिक स्वायत्तता की निरंतरता

पूरे शोध का सबसे सशक्त पक्ष यह है कि वैश्विक व्यवस्था के बदलने (एकध्रुवीय से बहुध्रुवीय) के बावजूद, भारत ने अपनी 'रणनीतिक स्वायत्तता' (Strategic Autonomy) को अक्षुण्ण रखा है। चाहे वह 1971 की सोवियत संधि हो या वर्तमान में रूस-यूक्रेन संघर्ष के बीच रूस और अमेरिका दोनों के साथ संतुलन साधना, भारत ने सिद्ध किया है कि उसके निर्णय किसी बाहरी दबाव के बजाय 'राष्ट्रीय हितों' से प्रेरित होते हैं।

(iii) 'सॉफ्ट पावर' से 'लीडिंग पावर' तक

भारत की यात्रा एक 'विकासशील राष्ट्र' से 'वैश्विक समाधान प्रदाता' (Global Solution Provider) के रूप में विकसित हुई है। 'वैक्सीन मैत्री', 'अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन' और 'डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर' (UPI/Aadhar) के वैश्विक प्रसार ने भारत को एक ऐसी शक्ति के रूप में स्थापित किया है जो केवल अपने लिए नहीं, बल्कि पूरे 'ग्लोबल साउथ' के लिए सोचती है।

(iv) बदलती वैश्विक व्यवस्था और भारत

निष्कर्ष यह भी रेखांकित करता है कि वर्तमान में भारत 'संतुलनकारी शक्ति' (Balancing Power) की भूमिका से आगे बढ़कर 'नियम निर्धारित करने वाली शक्ति' (Rule-making Power) बनने की ओर अग्रसर है। G20 की अध्यक्षता और सुरक्षा परिषद में सुधारों की पुरजोर मांग इस बात का प्रमाण है कि भारत अब वैश्विक मेज पर एक समान भागीदार के रूप में खड़ा है।

(v) भावी मार्ग (Way Forward)

अंततः, भारत के सामने चीन के साथ सीमा विवाद और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सुरक्षा जैसी चुनौतियां बरकरार हैं। लेकिन, 'पड़ोसी प्रथम' और 'एक्ट ईस्ट' जैसी सक्रिय नीतियों के साथ, भारत अपनी रक्षा और कूटनीति के बीच एक बेहतर सामंजस्य बिठाने में सफल रहा है। भविष्य की भारतीय विदेश नीति अधिक 'बहु-संरेखित' (Multi-aligned) होगी, जो 'वसुधैव कुटुंबकम्' के दर्शन और 'राष्ट्रीय हित प्रथम' के संकल्प के साथ संचालित होगी।

संदर्भ सूची

1. दीक्षित जेएन. *Makers of India's Foreign Policy: Raja Ram Mohan Roy to Yashwant Sinha*. नई दिल्ली: हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया; 2004. पृ. 56-89, 112-135।
2. जयशंकर एस. *The India Way: Strategies for an Uncertain World*. नई दिल्ली: हार्पर कॉलिन्स इंडिया; 2020. पृ. 1-15, 212-230।
3. राजामोहन सी. *Crossing the Rubicon: The Shaping of India's New Foreign Policy*. न्यूयॉर्क: पालग्रेव मैकमिलन; 2003. पृ. 34-58, 256-270।
4. गुहा रामचंद्र. *India After Gandhi: The History of the World's Largest Democracy*. नई दिल्ली: पिकाडोर; 2007. पृ. 160-185, 630-655।
5. पंत एचवी. *Indian Foreign Policy: An Overview*. मैनेचेस्टर: मैनेचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस; 2016. पृ. 78-102, 145-160।
6. मेनन शिवशंकर. *Choices: Inside the Making of India's Foreign Policy*. वॉशिंगटन डीसी: ब्रुकिंग्स इंस्टीट्यूशन प्रेस; 2016. पृ. 88-115, 140-165।
7. विदेश मंत्रालय (भारत). *वार्षिक रिपोर्ट 2023-2024*. नई दिल्ली: भारत सरकार; 2024. पृ. 10-25, 60-75।
8. भारत सरकार. भारत-चीन के बीच व्यापार एवं समागम समझौता (पंचशील) पर प्रेस विज्ञप्ति। नई दिल्ली: विदेश मंत्रालय अभिलेखागार; 1954।
9. संयुक्त राष्ट्र संघ. भारत की स्थायी सदस्यता एवं सुरक्षा परिषद सुधार पर भाषण। न्यूयॉर्क: संयुक्त राष्ट्र रिकॉर्ड्स; 2023।
10. खन्ना वीएन. भारतीय विदेश नीति में निरंतरता के तत्व: एक ऐतिहासिक विश्लेषण। *इंडियन जर्नल ऑफ कूटनीति*. 2019;12(4):45-62।
11. मजूमदार मुनमुन. लुक ईस्ट से एक्ट ईस्ट: भारत की बदलती कूटनीति। *साउथ एशियन स्टडीज जर्नल*. 2021;26(1):102-118।

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution-Non-commercial-No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the corresponding author



Dr. Madhulika Kumari is an Assistant Professor at Shri Davara University, Raipur, Chhattisgarh. She is engaged in teaching, research, and academic development, with a focus on higher education and scholarly advancement. Her work contributes to student learning, research innovation, and the promotion of academic excellence in her field.